17 जनवरी 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन

पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 20 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (द्वितीय), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, नेहरु पुतला इतवारी के 23 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में रेशमबाग स्थित बनारस नगरी में श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर के आयोजकत्व में आयोजित श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव गुरुवार, दिनाँक 1 जनवरी 2015 से बुधवार 7 जनवरी 2015 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी छिन्दवाड़ा, पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा इत्यादि अनेक विद्वानों का सानिध्य प्राप्त हुआ।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर, पण्डित मधुकरजी जैन जलगाँव, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित रमेशजी ज्ञायक इन्दौर, पण्डित अशोककुमारजी उज्जैन, पण्डित सुबोधजी जैन ग्वालियर, पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी के सानिध्य में शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार संपन्न हुई।

बालक पार्श्वकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती स्नेहलता-जैनबहादुरजी कानपुर को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री निकुंज-शची सिंघई, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री सुरेन्द्र-नीतू देवड़िया एवं महायज्ञनायक-नायिका श्री विवेक-नेहा देवड़िया थे। यागमंडल विधान का उद्घाटन सेठ श्री गुलाबचंदजी जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट सागर, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री कपूरचंद अनिलकुमार जैन 'डैडी' परिवार भोपाल, सिंहद्वार उद्घाटन श्री शान्तिकुमारजी जैन जबलपुर एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री विजयजी बड़जात्या व श्री पदमजी पहाड़िया इन्दौर ने किया।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्री अशोककुमार जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल के करकमलों द्वारा किया गया।

महोत्सव के विशिष्ट कार्यक्रमों के अन्तर्गत 45 फीट का कांच से बना

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की -

साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 25 दिसम्बर 2014 से 2 जनवरी 2015 तक विभिन्न साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई।

दिनांक 25 दिसम्बर को प्रात: प्रवचनोपरान्त पण्डित रतनंचदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में श्री इन्दरचन्दजी कटारिया जयपुर द्वारा प्रतियोगिताओं का उद्घाटन हुआ। पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने प्रतियोगिताओं की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। पण्डित परमात्मप्रकाशजी ने कहा कि जो प्रतियोगी हैं, वे ही विजेता हैं, जिसने प्रतियोगिताओं में भाग नहीं लिया वह तो प्रतियोगिता होने से पहले ही हार गया। इसके अतिरिक्त ब्र. यशपालजी जैन, डॉ. दीपकजी वैद्य, श्री अजितजी तोतुका, पण्डित संजयजी बड़ामलहरा, पण्डित गोम्मटेशजी चौगुले, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 25 दिसम्बर को प्रात: **श्लोकपाठ प्रतियोगिता** में चर्चित जैन प्रथम व मंथन गाला द्वितीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. वाई.एस. रमेशजी (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान विश्वविद्यालय) थे। निर्णायक के रूप में पण्डित शांतिकुमार पाटील एवं पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा उपस्थित थे। प्रतियोगिता का संचालन नरेश जैन भगवां एवं सौरभ जैन कोलारस ने किया।

दिनांक 25 दिसम्बर को रात्रि में **शास्त्री वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता** में जिनेश सेठ मुम्बई ने प्रथम एवं अच्युतकांत जैन जसवंतनगर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. प्रभाकरजी सेठी ने की तथा निर्णायक के रूप में पण्डित पीयूषजी शास्त्री व डॉ. नीतेशजी शाह उपस्थित थे। संचालन अनुभव जैन सिलवानी व श्रीशांत उखलकर ने किया।

दिनांक 26 दिसम्बर को प्रात: **अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान अच्युतकांत जैन एवं द्वितीय स्थान जिनेश सेठ ने प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री जे.के. अग्रवाल एवं निर्णायक के रूप में डॉ. मुकेशजी एवं श्रीमती परिणति जैन विदिशा उपस्थित थे। संचालन प्रखर जैन छिन्दवाड़ा व शुभम हाथगिणे ने किया।

दिनांक 26 दिसम्बर को रात्रि में **संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता** में अच्युतकांत जैन ने प्रथम एवं नयन जैन बरायठा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. श्रीयांसजी सिंघई (जैनदर्शन विभागाध्यक्ष -

(शेष पृष्ठ 5 पर ...)

सम्पादकीय –

संस्कार

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

गंभीर व्यक्तित्व के धनी प्रो. ज्ञान ने सबकी सब बातों को धैर्यपूर्वक शान्ति से सुन लिया। किसी पर भी कोई प्रतिक्रिया प्रगट नहीं की। चेहरे पर भी कोई घृणा या क्षोभ का भाव नहीं आने दिया; क्योंकि ज्ञान के लिए यह सब चर्चा–वार्ता कोई नई बात नहीं थी। उसे तो आये दिन किसी न किसी बात को लेकर इसी तरह व्यंग्य–वाणों का निशाना बनना ही पड़ता था; क्योंकि उसकी कर्तव्यनिष्ठा उसके नये साथियों को पसंद नहीं थी, ''पर खटमलों के कारण खाट और बिस्तर थोड़े ही फैंक दिया जाता है और मच्छरों की वजह से मकान थोड़े ही छोड़ दिया जाता है।'' यह सोचकर वह अपने कर्तव्य को बराबर नियमित रूप से करता रहा।

बस, उस बेचारे का अपराध ही केवल यह था कि वह अपने कर्तव्य के प्रति इतना जागरूक क्यों है ? वह उनके कदम से कदम मिलाकर क्यों नहीं चलता ? जैसा वे सब करते हैं, वही सब वह क्यों नहीं करता ? जब वे सब हीटर से हाथ सेक रहे थे, तब उसने कक्षा क्यों ली ? वह सबका साथ छोड़कर अकेला ही अधिकारियों और विद्यार्थियों का चहेता क्यों बनना चाहता है ?

ज्ञान की टीका–टिप्पणी करते हुए अध्यापक आपस में बातें कर रहे थे।

एक शिक्षक बोला – ''उसका क्या ? न कोई आगे, न कोई पीछे और न स्वयं को भी कोई शौक, इस कारण उसका खर्च ही क्या है ? पर हम तो बाल–बच्चों वाले हैं न ? अत: हमें तो ट्यूशनें भी चाहिए न ? यदि यहीं पर सब कुछ पढा देंगे तो हमारे पास ट्यूशन से पढने कौन आयेगा ? कभी–कभी तो पीरियड छोड़ने का बहाना मिलता है, सो उसे भी ....। ये हजरत न कभी स्वयं चैन से बैठेंगे और न दूसरों को बैठने देंगे।''

दूसरे ने कहा – ''इसके घर में कोई मन लगने–लगाने के साधन तो हैं नहीं, इसकारण समय से भी दस–बीस मिनट पहले यहाँ आ जाना और जब तक पूरा विद्यालय बन्द न हो जाये तब तक विद्यालय में जमे रहना तथा प्रत्येक पीरियड को पूरे समय तक घसीटना तो इसका स्वभाव–सा बन गया है। सो इसकी तो ये जाने; पर इसके कारण आजू–बाजू की कक्षाओं के शिक्षकों को भी पूरा पीरियड लेना पड़ता है। वे बेचारे कभी पाँच–दस मिनट पहले भी पीरियड नहीं छोड़ पाते।''

तीसरे ने कहा – ''हाँ यार ! इसके इस आदर्शवाद ने हम लोगों को तो तंग कर ही रखा है, प्राचार्य भी इससे परेशान रहते हैं। यह उन्हें भी समय–समय पर कर्तव्य का पाठ पढाये बिना नहीं मानता। वे नये–नये आये हैं न ? और इसकी पहुँच ऊपर तक है, बस इसी से इसका दिमाग सातवें आकाश में चढ रहा है। और यह उनका प्रिय भी बनना चाहता है। ठीक है, हम भी देख लेंगे, यह अपने आपको समझता क्या है ? हम भी ऊपर तक पहुँचना जानते हैं।''

जब अध्यापकों की व्यंगोक्तियों और ईर्ष्याभरी वार्ता सुनते–सुनते बहुत देर हो गई तो उन्हीं में से एक गम्भीर प्रकृति के अध्यापक ने ज्ञान के पक्ष में बोलते हुए कहा – ''देखो भाई ! तुम कुछ भी कहो; पर वह आदमी है तो ईमानदार। परिश्रमी भी है और भला भी है। वह जो भी करता है, जनहित की दृष्टि से तो ठीक ही करता है।

यदि तुम भी अपने हृदय पर हाथ रखकर स्वयं अपनी आत्मा से पूछो तो तुम्हारी अन्तरात्मा भी यही कहेगी – 'वह जो भी करता है सब ठीक ही करता है।' तुम्ही बताओ वह बुरा क्या करता है ?

तुम लोग उसे इतना सताते हो, अपमानित भी करते हो, तब भी वह बेचारा तुम्हारे विरुद्ध कभी कहीं मुँह नहीं खोलता। उसने आज तक न कभी विज्ञान के साथ अपनी बचपन से चली आ रही मित्रता का लाभ उठाया और न अपने पिता के प्रभाव का ही उपयोग किया। यदि कोई और होता तो...।

चौथे ने कहा – ''बात तो तुम ठीक कहते हो, परन्तु ...।''

''परन्तु क्या ?'' – पहले शिक्षक ने कहा।

पुराने शिक्षक ने आँख बदलते हुए उत्तर दिया – ''यह किन्तु–परन्तु लगाकर मैं किसी को इस तरह बिना कारण अपमानित करना व सताना सहन नहीं कर सकता। मैं उस सीधे–सादे सज्जन व्यक्ति की सज्जनता को इस तरह अपमानित नहीं होने दूँगा। तुम्हें पता होना चाहिए कि वह मेरा शिष्य भी रहा है।''

वातावरण का रुख बदला देख शेष लोगों की आगे कुछ बोलने की हिम्मत तो नहीं हुई, पर कुछ ने मुँह टेढाकर उपेक्षाभाव प्रदर्शित तो कर ही दिया। और सबने थोड़ी देर के लिए चुप्पी साध ली।

वातावरण की गम्भीरता को पुन: भंग करते हुए बात बदलकर एक ने दूसरे से आपस में कहा – ''मित्र ! तुम्हारी कल की भांग ने तो ऐसा रंग जमाया कि मैं चौबीस घंटे में मुश्किल से यहाँ आने लायक हो पाया हूँ। उसके नशे से कल का पूरा दिन तो बेकार हो ही गया, आज भी कुछ काम करने जैसी स्थिति नहीं है। लिखने में हाथ काँपते हैं और चलने में पैर। बड़ा बुरा नशा होता है भांग का। तुम्हें मालूम है कि मैं कभी भांग नहीं पीता, फिर तुमने बिना बताये

ठंडाई के नाम पर भांग क्यों पिला दी ?''

एक अन्य शिक्षक बोला - ''तो क्या हुआ ? कोई रोज-रोज थोड़े ही घुटती है और उसमें नहीं पीने जैसी बात ही क्या है ? अरे! यह तो भगवान शंकर की प्रिय बूटी है, शंकर की ! समझे ? यदि पियोगे ही नहीं तो पीना सीखोगे कैसे ?''

तीसरे ने सिगरेट सुलगाकर कश लगाते हुए बहस को बंद करने की नियत से कहा - ''यह सब तो जो हुआ सो हो गया। अब इस पर बहस करने से क्या लाभ ? अब तो यह बताओ कि अगले रविवार के मनोरंजन के लिए क्या कार्यक्रम बनाया है ?''

चौथे ने व्यंग्य में कहा - ''अरे भाई ! क्या तुम्हें इतना भी होश नहीं है ? अभी-अभी तुमने सांस्कृतिक कार्यक्रम के संयोजक प्रो. ज्ञान साहब की यह सूचना नहीं पढी - ''अगले रविवार को सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण, निबन्ध एवं खेलकूद प्रतियोगितायें आयोजित की गई हैं, उनमें सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय है।''

पाँचवें ने सूचना के शब्दों में से ''बाल की खाल निकालते हुए कहा - ''उपस्थिति प्रार्थनीय ही तो है, अनिवार्य तो नहीं।''

''हाँ, है तो प्रार्थनीय ही'' - एक अन्य ने कहा।

''बस तो फिर क्या है, बना देंगे कोई बहाना। तुम तो यह बताओ कि तुम्हारा मनोरंजन का कार्यक्रम क्या है ? सप्ताह में एक ही दिन तो मिलता है इसके लिए, उस दिन भी यही माथा-पच्ची !...''

बातों-बातों में दूसरा पीरियड भी पूरा हो गया, पर अध्यापकों की बातें पूरी नहीं हो पाई। विद्यार्थी भी आखिर कक्षा में बैठे-बैठे कब तक प्रतीक्षा करते। वे भी एक-एक करके वहाँ से खिसकने लगे।

कुछ ने बारह से तीन वाले शो में सिनेमा जाने का कार्यक्रम बना लिया। कुछ इधर-उधर हो गए और कुछ अपने-अपने घर चले गये।

जो माता-पिता बालकों की पढाई के प्रति जागरूक थे, जिम्मेदारी अनुभव करते थे, उनमें से एक ने पूछा - ''क्यों राजू ! आज तुम विद्यालय से इतने जल्दी वापस कैसे आ गये ?

राजू एक क्षण तो चुप रहा, फिर प्राचार्य के प्रति अपने असंतोष को प्रकट करते हुए व्यंग्य में बोला - ''आज हमारे प्राचार्य महोदय की कन्डोलेन्स मीटिंग (शोक सभा) के कारण छुट्टी हो गई है।''

राजू के भोले-भाले पिता राजू के व्यंग्य की भाषा न समझ सके। अत: उन्होंने गंभीर होकर पश्चाताप प्रगट करते हुए कहा - ''अरे ! यह तो बहुत बुरा हुआ ! बेचारे बहुत भले आदमी थे।

राजू तीखे स्वर में बोला - ''क्या कहा पापा ! भले आदमी! अरे ! किसने बना दिया उसे प्रिंसिपल ?'' और तुम कहते हो कि बहुत बुरा हुआ ! पापा ! यदि ऐसा बुरा असल में एक बार हो जाता तो कहीं अधिक अच्छा होता। हम लोगों को उनके पुतले जला-जलाकर बार-बार नकली कन्डोलेंस तो न करनी पड़ती। उनके नाम पर बार-बार रोने से तो बच जाते।''

''राजू ! तू क्या बकता है ? क्या तुम लोगों ने प्रिंसिपल का पुतला जलाया है ? यह तो तुम लोगों ने अच्छा नहीं किया।''

''अरे पापा ! मैंने कुछ नहीं किया। मैं करता भी कैसे ? आपका बेटा जो ठहरा ! पर आप किस-किस को रोक लेंगे ? जब वे स्वयं जिन्दा रहकर भी मरे जैसे सिद्ध हो रहे हैं। कोई कुछ भी कहे, उनकी कान पर जूँ तक नहीं रेंगती। उन्हें तो न्यूज पेपर पढने से ही फुरसत नहीं मिलती।

कौन पीरियड ले रहा है, कौन नहीं ले रहा है, कौन अब आया, कब चला गया ? कुछ देखते ही नहीं। देख भी लेते हैं तो कुछ कहते नहीं हैं।

वे ऑफिस में बैठे-बैठे अखबार पढते रहते और अध्यापक लोग स्टाफ रूम में गप्पे लगाते रहते। विद्यार्थियों को तो छुट्टी से स्वभाव से ही प्रेम होता है। कोई बहाना मिला नहीं कि एक-एक कर खिसकने लगते हैं। दस-पाँच जो पढने के प्रति सीरियस होते हैं, जब वे 'सर' से पढाने को कहते, तो उनसे यह पूछा जाता, कितने लड़के हैं क्लास रूम में ?

उत्तर मिलता - ''दस-बारह''

सर कहते - ''बस, दस-बारह ही ! बाकी कहाँ गये ?''

छात्र कहता - ''सर ! यहाँ-वहाँ घूम-फिर रहे होंगे, आप क्लास में पहुँचेंगे तो आपको देखकर शायद और दस-पाँच आ जावें।''

सर का उत्तर होता - ''अच्छा ऐसा करो, कल सबको रोककर रखना, ठीक है न ?''

बस, आये दिन यही होता है। वे दस-पाँच छात्र भी निराश हो मुँह लटकाये चल देते।

यदि शिक्षकों को बार-बार बुलाने जाते तो लड़के अलग झगड़ते और शिक्षक अलग झिड़कते। बहुत हुआ तो कह देते, चलो ! बैठो क्लास में ! अभी आते हैं। पर उनकी वह 'अभी' कभी नहीं होती। आखिर कोई कब तक इन्तजार करे रोज-रोज ? धीरे-धीरे लड़के उनकी 'अभी' का अर्थ समझने लगे थे, अत: 'अभी' शब्द सुनते ही सब घर को चल देते।

मैंने भी सोचा - ''चलो घर ही चलें, वही कुछ पढेंगे-लिखेंगे।''

(क्रमशः)

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – (चौथी किश्त, गतांक से आगे)

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

अब तक हमने पढा कि किस प्रकार ***हमारी कल्पना का भगवान उन सभी मानव सुलभ कमियों और दुर्गुणों से भरापूरा है जिन दुर्गुणों के धारक व्यक्ति से हम साधारण सा सम्बन्ध रखना भी पसंद नहीं करते और ऐसे किसी व्यक्ति की संगति को हम अपने जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य मानते हैं। इसप्रकार हमारे और हमारी कल्पना के हमारे भगवान के बीच का रिश्ता अत्यंत अनिश्चित सा अत्यन्त अविश्वास का, अत्यन्त क्षणिक, स्वार्थ से भरपूर और निष्ठा विहीन ही होता है।*** अब आगे पढिये –

कुएं के मेंढक (कूपमंडूक) के लिए सिर्फ कुआं ही सारी दुनिया है और कुएं के अलावा दुनिया में और कुछ भी नहीं है। उसकी सोच का दायरा मात्र कुएं तक ही सीमित है वह उससे आगे और कुछ भी नहीं सोच सकता है, कल्पना में भी नहीं, आखिर कैसे सोचे ? उसने उस कुएं के अलावा और कुछ देखा ही नहीं है।

हमें कुएं के उस मेंढक की तुच्छ बुद्धि पर तरस आ सकता है, आखिर क्यों न आये, यह उसकी बेचारगी ही तो है कि इतने विशाल ब्रह्मांड की उसे खबर ही नहीं जो हमारे लिये सहज सुलभ है। ***क्या हमने कभी विचार किया कि हमारी स्थिति भी उस कूपमंडूक से किस मायने में भिन्न है ?***

फर्क यदि कोई है तो सिर्फ दायरे का है, उस कुएं के मेंढक का दायरा कुएं तक सीमित है और हमारा दायरा ? हमारा दायरा बस उससे कुछ ही बड़ा है।

क्या कहा ? मात्र कुछ ही बड़ा ?

हाँ भाई ! कुएं के आकार में और तेरी दुनिया के आकार में जितना अन्तर है उससे कई गुना बड़ा अन्तर तेरी दुनिया और वास्तविक दुनिया में है; पर तुझे इन बातों की खबर/विचार ही कहाँ; तू भी बस उस कूपमंडूक की ही तरह मात्र अपनी सीमित दुनिया तक ही तो सीमित है, तेरी बुद्धि की गति भी तो एक सीमा से आगे नहीं है।

यही कारण है कि हम सभी लोग तो अपने दिन–प्रतिदिन के क्षुद्र व्यवहारों में ही उलझे रहते हैं, **वही संयोग–वियोग, वही अपना–पराया, वही राग–द्वेष, वही लाभ–हानि, वही हर्ष–विषाद, वही मित्र–शत्रु, वही जैसे को तैसा, वही दंड–प्रतिशोध या पुरस्कार, वही दान–भिक्षा, वही सेवक–स्वामी, छोटा–बड़ा, वही ऊँच–नीच, वही अनुकूल–प्रतिकूल, वही मौजशौक एवं समस्याएं, वही सद्भाव–अभाव, वही भूख–प्यास, वही व्याधि–रोग या बल, वही मान–अपमान, वही दिन–रात, वही सर्दी–गर्मी, वही जात–बिरादरी, वही स्वदेश–परदेश, वही पुण्य–पाप, वही नैतिक–अनैतिक, वही दिन–हफ्ते–माह–वर्ष और युग; हमारी सोच का दायरा इन सबसे आगे नहीं है।** हमारे ***उक्त सभी मामले द्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव की मर्यादा लिये हुये हैं और इन सबसे सम्बन्धित हमारी सोच एक सीमित सोच है, इसमें पूर्णता का अभाव है।***

धर्म और भगवान पूर्णता को प्राप्त हैं, ये अपूर्ण नहीं हो सकते है, किसी भी अपूर्णता में धर्म और भगवान की कल्पना हमारा अविवेक है।

धर्म और भगवान की उस पूर्णता और विशालता के न तो हमने दर्शन किये हैं और न ही वह हमारे ज्ञान और कल्पना का विषय ही बन पाये हैं; क्योंकि हमारे वर्तमान ज्ञान और कल्पना का दायरा अत्यंत सीमित है। **हम मात्र वर्तमान या एक सीमित काल की, सीमित क्षेत्र की, सीमित लोगों के सीमित मामलों (सन्दर्भों–concerns) में ही उलझे हुए हैं तब वे अनंत गुणों के धारी, अनंत शक्तियों से सम्पन्न धर्म और भगवान हमारी इन सीमाओं में कैसे समा सकते हैं ?**

धर्म और भगवान के सन्दर्भ में हमारी विषमताओं का सबसे बड़ा कारण यह है कि ***होना तो यह चाहिए था कि हम धर्म का अध्ययन करते, भगवान के स्वरूप को जानते–समझते, उनके गुणों और शक्तियों को पहिचानते तथा उन्हें अपने में स्थापित करने की दिशा में आगे बढते;*** **पर इसके विपरीत हमने** अपनी कल्पना में **अपनी कमजोरियों और अवगुणों को धर्म और भगवान में स्थापित कर लिया** इसप्रकार ***(हमारी कल्पना के) भगवान भी हमसे (हमारी वर्तमान स्थिति से) किसी भी प्रकार से भिन्न नहीं रहे, वे भी हमारे जैसे ही हो गए, हममें से ही एक हो गये।*** **धर्म और भगवान का वास्तविक स्वरूप समझने की कोशिश करने की बजाय हमने अपनी कल्पना में धर्म और भगवान का एक काल्पनिक रूप तैयार किया और विचारों के इस** दरिद्री **की कल्पना भी आखिर कहाँ तक दौड़ सकती थी और परिणाम सामने है।**

हमारी कल्पना के भगवान भी वीतरागी नहीं हमारी ही तरह रागी–द्वेषी हो गए, वे भी सर्वज्ञ नहीं रहे आधे–अधूरे ज्ञान वाले हो गए, वे ज्ञाता–दृष्टा नहीं रहे, अकर्ता नहीं रहे कर्ता–धर्ता बन बैठे, वे स्वतंत्र भी नहीं रह पाए वे भक्तों की इच्छा–आकांक्षा और पूजा–प्रार्थना के आधीन हो गए। वे परिपूर्ण भी नहीं रहे और हमारे ही समान मजबूर हो गए, सर्वसामान्य सुलभ समस्त कमजोरियाँ भी उनके व्यक्तित्व में प्रवेश कर गईं जैसेकि भूख–प्यास, हर्ष–विषाद, भय–लोभ, बनाव–श्रृंगार आदि। वे भी हमारी ही तरह पूजकों–प्रशंसकों से खुश और निंदकों पर कुपित

होने लगे आदि आदि।

हमने हमारी कल्पना के उक्त भगवानों की कथित आराधना को धर्म मान लिया और आराधना के नाम पर उन भगवानों के साथ मोलभाव करने वाले या भीख मांगने वाले व्यापारियों को धर्मात्मा।

जिन्हें कुछ पाने का भरोसा या आशा नहीं है, वे उनका नाम स्मरण नहीं करते हैं; क्योंकि वे व्यर्थ प्रयत्न नहीं करना चाहते हैं और इसलिए वे नास्तिक कहलाने लगते हैं।

जरा विचार तो करें कि हमारी कल्पना के ये भगवान हमें किस तरह अपने से भिन्न दिखाई देते हैं, सिवाय इसके कि हमने उनमें उन कुछ शक्तियों के अस्तित्व की कल्पना की है जो उनमें हमसे विशेष हैं, वे हमसे अधिक बलशाली और साधन सम्पन्न हैं, उनकी सभी इन्द्रियाँ हमसे अधिक प्रबल हैं और उनका प्रभाव क्षेत्र हमसे बड़ा है बस !

शक्तियाँ, प्रभाव और साधन सम्पन्नता का इसप्रकार का फर्क तो हम मानवों में भी बहुतायत से पाया जाता है और इस फर्क के आधार पर हम मानवों को भी कई श्रेणियों में वर्गीकृत कर सकते हैं, गरीब-अमीर, कुरूप-सुन्दर, कमजोर-बलशाली, नादान-अनुभवी, मूर्ख-बुद्धिमान, अज्ञानी-ज्ञानी, साधनहीन-साधनसम्पन्न, असमर्थ-समर्थ, प्रजा-राजा इत्यादि। इनमें एक मानव गरीब, कुरूप, कमजोर, नादान, मूर्ख, अज्ञानी, साधनहीन और असमर्थ हो सकता है और दूसरा अमीर, सुन्दर, बलशाली, अनुभवी, बुद्धिमान, ज्ञानी, साधनसम्पन्न और समर्थ हो सकता है और इन दो श्रेणियों के बीच सभी मानवों को अनेक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

***हमारी कल्पना के भगवान इन अनेक श्रेणियों में सबसे ऊपर एक सुपरमैन की श्रेणी में वर्गीकृत किये जा सकते हैं, जो भोग में भी सर्वोच्च हैं और योग में भी, जो शारीरिक रूप से भी सर्वाधिक बलिष्ठ हैं और सर्वाधिक साधनसम्पन्न व प्रभावशाली भी;* पर हमारी कल्पना के ये भगवान भी हमारी ही तरह चुनौती रहित या स्पर्धा रहित नहीं है, इनके कर्तृत्व और सत्ता को चुनौती देने वाले और उसमें दखलंदाजी करने वाली अन्य शक्तियाँ भी लोक में (हमारी कल्पना में) विद्यमान हैं।**

एक ओर हम उस भगवान को सर्वशक्तिमान कहते हैं तो दूसरी *ओर हमने अलग-अलग कामों के लिए अलग-अलग भगवानों की नियुक्ति की है, तो क्या प्रत्येक भगवान की शक्तियाँ भी हमारी ही तरह सीमित है और क्या एक ही भगवान सब कुछ करने में सक्षम नहीं है ?*

कार्यक्षेत्रों में इस प्रकार के बंटवारे के कारण (हमारी कल्पना के) भगवानों के बीच भी हम मनुष्यों की ही तरह अधिकारक्षेत्रों का टकराव दृष्टिगत होता है। **(क्रमश:)**

(पृष्ठ 1 का शेष... खेलकूद)

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान) ने की। निर्णायक डॉ. राजधरजी मिश्र (राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय) व पण्डित शांतिकुमारजी पाटील थे। संचालन बाहुबली जैन दमोह व शैलेष घोडके जिंतूर ने किया।

दिनांक 27 दिसम्बर को प्रात: **भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग)** में पारस जैन खेकड़ा ने प्रथम एवं श्रुति जैन जयपुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अध्यक्षता श्री ताराचंदजी सोगानी ने की। निर्णायक के रूप में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ व पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना थे। संचालन अक्षय अन्नदाते औरंगाबाद एवं योगेश जैन देवरी ने किया।

दिनांक 27 दिसम्बर को रात्रि में **काव्यपाठ प्रतियोगिता** के अन्तर्गत पीयूष जैन गौरझामर ने प्रथम एवं अनुभव जैन खनियांधाना ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की। निर्णायक डॉ. भागचंदजी जैन एवं डॉ. नवलकिशोरजी दुबे थे। संचालन प्रियम जैन बड़ामलहरा व संदेश जैन मजगुंआ ने किया।

दिनांक 28 दिसम्बर को प्रात: **उपाध्याय वर्ग की तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता में** प्रशान्त जैन खेकड़ा ने प्रथम एवं सम्मेद जैन टीकमगढ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती कमला भारिल्ल ने की। निर्णायक पण्डित संजीवजी खड़ैरी एवं डॉ. सुभाषजी (राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान) थे। संचालन सुमित जैन खरैह एवं ब्रजेन्द्र जैन अमरमऊ ने किया।

दिनांक 28 दिसम्बर को रात्रि में **भजन प्रतियोगिता** के अन्तर्गत विजय जैन सिमरिया ने प्रथम व विकेश जैन खड़ैरी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रकाशचंदजी जैन ने की। निर्णायक श्रीमती वंदनाजी व पण्डित सोनूजी शास्त्री थे। संचालन प्रियम जैन बड़ामलहरा व सौरभ जैन कोलारस ने किया।

दिनांक 29 दिसम्बर को प्रात: **भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग)** में अच्युतकान्त जैन ने प्रथम एवं अंकित जैन धार व बाहुबली जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की। निर्णायक पण्डित प्रमोदजी शाहगढ व पण्डित मनीषजी कहान थे। संचालन संकेत बोरालकर एवं गणेश वायकोस औरंगाबाद ने किया।

दिनांक 29 दिसम्बर को रात्रि में **अंत्याक्षरी प्रतियोगिता** के अन्तर्गत चर्चित जैन व नमन जैन ने प्रथम तथा सौरभ जैन व प्रियम जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पण्डित प्रमोदजी शास्त्री भिण्ड थे। निर्णायक श्रीमती समता गोदीका एवं पण्डित गोम्मटेश्वरजी चौगुले थे। संचालन नितिन जैन झालरापाटन एवं अमोल महाजन ने किया।

इसी क्रम में खेलकूद प्रतियोगिताओं में कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ।

वॉलीबॉल प्रतियोगिता का उद्घाटन डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने किया। बैडमिन्टन प्रतियोगिता का उद्घाटन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री द्वारा किया गया।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। इस प्रकार संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

दृष्टि का विषय

9 तृतीय प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जैनदर्शन में एक पंक्ति ऐसी नहीं है, जो बिना नयों के अर्थात् बिना अपेक्षा के लिखी हो।

अब यदि कोई कहे कि हमने तो ऐसी सैकड़ों पंक्तियाँ देखी हैं, जिनमें अपेक्षा नहीं लगी है ?

इस पर आचार्य समंतभद्र कहते हैं कि हम स्याद्वादी हैं। हम अपेक्षा लगाए तो भी अपेक्षा लगी है और हम अपेक्षा नहीं लगाएँ, तब भी अपेक्षा लगी है। हमारे सभी कथन अपेक्षा से ही हैं।

अरे भाई ! स्याद्वादियों को सभी जगह अपेक्षा लगाने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि उनके यहाँ तो अपेक्षा के बिना कोई बात होती ही नहीं है।

अतः जहाँ अपेक्षा न लगी हो, वहाँ भी वह कथन सापेक्ष ही है – यही समझना चाहिए।

विशेष, दृष्टि के विषय में शामिल हैं तो वह भी अपेक्षा से है और शामिल नहीं है तो वह भी अपेक्षा से ही नहीं है।

यदि हम आचार्य समंतभद्र के शिष्य हैं तो हम कितना भी कहें कि हम अपेक्षा को नहीं मानते, पर उससे कुछ होने वाला नहीं है।

अरे भाई ! हमें अपेक्षा को छोड़ने के लिए जैनधर्म को छोड़ना होगा, जैनधर्म को तिलांजलि देनी पड़ेगी।

जो-जो भारत में रहते हैं, वे सभी भारतीय हैं। अब यदि कोई कहे कि नहीं-नहीं, हम तो गुजराती हैं। वह व्यक्ति कितना भी कहे; लेकिन वह भारतीय ही रहेगा; क्योंकि गुजराती नाम की नागरिकता इस दुनिया में है ही नहीं, गुजरात नाम का देश है ही नहीं। गुजरात तो प्रदेश है और प्रदेशों की नागरिकता नहीं होती है। वह अपने को भारतीय माने तो भारतीय हैं और यदि भारतीय नहीं माने, तब भी भारतीय हैं।

वैसे ही जैनधर्म मानने वालों के यहाँ अपेक्षा लगी ही रहती है, वे अपेक्षा लगाएँ, तब भी और अपेक्षा नहीं लगाएँ, तब भी।

हम मनुष्य हैं भी और हम मनुष्य नहीं भी हैं; क्योंकि मनुष्यगति की अपेक्षा हम मनुष्य हैं और 'द्रव्यदृष्टि' की अपेक्षा 'मनुष्य नहीं हैं' – शास्त्रों में यह भी लिखा मिलता है; अतएव मनुष्य नहीं भी हैं।

'हम पुरुष हैं' यह अपेक्षा भी जिनवाणी में है और 'हम आत्मा हैं', यह अपेक्षा भी जिनवाणी में ही है, ये सभी कथन सापेक्ष सत्य हैं और निरपेक्ष हों तो सत्य नहीं हैं, मिथ्या हैं।

न मैं स्त्री हूँ, न मैं पुरुष हूँ, न मैं नपुंसक हूँ, न मैं मनुष्य हूँ, न मैं देव हूँ, न मैं नारकी हूँ – ये सभी कथन द्रव्यदृष्टि की अपेक्षा सत्य हैं।

'मैं मनुष्य हूँ' यह गति की अपेक्षा सत्य है, 'मैं पुरुष हूँ' यह लिंग की अपेक्षा सत्य है। अब यदि जैन मतावलम्बी ऐसा कहें कि 'मैं पुरुष हूँ और मैं पुरुष नहीं हूँ' यद्यपि इनमें अपेक्षा प्रकट नहीं है, तथापि इनमें अपेक्षा लगी हुई है।

आचार्य अमृतचन्द्र भी कहते हैं कि 'मैं आचार्य नहीं हूँ' और स्वयं अपने को लिखते हैं – 'आचार्य अमृतचन्द्र'। उन्हें 'आचार्य अमृतचन्द्र' जो कहा जा रहा है, वह दूसरी अपेक्षा है और जिस समय वे ये कह रहे हैं कि 'मैं आचार्य नहीं हूँ', वह दूसरी अपेक्षा है। इन अपेक्षाओं के बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता है।

इसीप्रकार ७३वीं गाथा की टीका में सामान्य-विशेषात्मक को दृष्टि का विषय कहा है। वहाँ सामान्य-विशेष की अपेक्षा पृथक् है। वहाँ सामान्य का अर्थ दर्शन है और विशेष का अर्थ है ज्ञान।

प्रश्न – द्रव्य शब्द का प्रयोग तो अनेक अर्थों में होता है। उनमें दृष्टि का विषय कौन-सा द्रव्य है ?

उत्तर – प्रत्येक वस्तु – द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावमय होती है। वस्तु के इन चार पक्षों में द्रव्य भी एक पक्ष है, जो सामान्य-विशेषात्मक होता है। इसप्रकार वस्तु के सामान्य-विशेषात्मक पक्ष को भी द्रव्य कहते हैं और मूल वस्तु को भी द्रव्य कहते हैं। ये दोनों ही द्रव्य द्रव्यदृष्टि के विषय नहीं बनते हैं।

इसप्रकार **एक द्रव्य** तो छह द्रव्यों वाला द्रव्य है।

दूसरा – वस्तु के सामान्य-विशेषादि चार पक्षों में से सामान्य-विशेष के सम्मिलितरूप को भी द्रव्य कहते हैं।

तीसरा – सामान्य, अभेद, नित्य और एक – इन चारों के सम्मिलित रूप का नाम द्रव्य है।

इसप्रकार इन सभी का नाम द्रव्य है; किन्तु दृष्टि का विषय तीसरे अर्थ वाला द्रव्य है; प्रथम व दूसरे वाला नहीं।

रुपया-पैसा को भी द्रव्य कहा जाता है, आजकल तो रुपया-पैसा वाले द्रव्य पर ही लोगों की दृष्टि है। जब मैं प्रवचन में बढ़िया-बढ़िया बातें कहता हूँ तो कोई ताली नहीं बजाता; जबकि किसी के पैसा दान करने की घोषणा की जाती है तो तत्काल तालियाँ बज उठती हैं। ऐसा इसलिए होता है; क्योंकि सभी श्रोता द्रव्यदृष्टि यानि कि पैसे की महिमावाले हैं और उनके चित्त में उस रुपये-पैसे नामक द्रव्य की इतनी महिमा है कि वे उसका नाम सुनते ही तालियाँ बजाने लगते हैं।

आजकल टी.वी. पर 'कौन बनेगा करोड़पति' कार्यक्रम देखकर सारी दुनिया दीवानी हो रही है। हमारे जैनभाई लोग भी पर्यूषणपर्व में 'कौन बनेगा गुणाधिपति', 'कौन बनेगा धर्माधिपति', 'कौन बनेगा पूजाधिपति' नामक कार्यक्रम कराने लग गए हैं। ये सब उसी कार्यक्रम की ही तो नकल हैं।

कार्यक्रम में दस-पाँच प्रश्न पूछकर उसे मोक्षाधिपति बना देते हैं और वह मोक्षाधिपति इनाम देने वाले के पैर छूता है। अरे भाई ! क्या मोक्षाधिपति भी किसी के पैर छूता है ? ये सब नकल का ही परिणाम है।

'कौन बनेगा करोड़पति' नाम सुनकर जैसी अन्दर में आनन्द की कणिका उत्पन्न होती है; वैसी आनन्द की कणिका जब आत्मा का नाम सुनकर पैदा होगी, तभी सम्यग्दर्शन की पात्रता उत्पन्न होगी।

आजकल टी.वी. को देखकर निरन्तर हम भी बदलते जा रहे हैं। **(क्रमशः)**

हार्दिक आमंत्रण : अवश्य पधारें !

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुनः ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का **तृतीय वार्षिक महोत्सव दिनांक 20 फरवरी से 22 फरवरी 2015 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

इस मंगल महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

वेदी शिलान्यास संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन महावीर परमागम मंदिर में दिनांक 17 व 18 दिसम्बर 2014 को वेदी शिलान्यास समारोह एवं रत्नत्रय मंडल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर स्थानीय विद्वान पण्डित ज्ञानचंदजी, पण्डित शिखरचंदजी के अतिरिक्त ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, ब्र. सुनील भैया शिवपुरी, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल आदि का सानिध्य प्राप्त हुआ।

दिनांक 17 दिसम्बर को श्री रत्नत्रय मंडल विधान का आयोजन हुआ। दिनांक 18 दिसम्बर को गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त ब्र. सुनील भैया के प्रवचनोपरांत शिलान्यास सभा का आयोजन किया गया। वेदी शिलान्यास श्री अजितप्रसादजी दिल्ली के करकमलों से हुआ। इनके अतिरिक्त सभी विद्वानों एवं अतिथिगणों द्वारा भी वेदी शिलान्यास किया गया।

(पृष्ठ 1 का शेष... पंचकल्याणक)

विशाल पालना दर्शनीय रहा। दिनांक 3 जनवरी को बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री परेश सौभाग्यमलजी जैन शिरपुर को मिला। पालना झूलन का उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी बजाज परिवार कोटा ने किया। सर्वप्रथम आहारदान का सौभाग्य श्री प्रदीप सुदीप राकेश मुन्नालाल जैन सागर परिवार नागपुर को प्राप्त हुआ।

इस महोत्सव में पार्श्वनाथ भगवान, महावीर भगवान, नेमिनाथ भगवान, मल्लिनाथ भगवान एवं वासुपूज्य भगवान की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। विधिनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान के भेंटकर्त्ता एवं विराजमानकर्त्ता श्री विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल्स दिल्ली थे। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, बालकक्षाओं, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत 'इतिहास के झरोखे से, मुक्ति के सोपान, विराधना का फल' आदि नाटिकायें आयोजित हुईं। संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 2-3 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

महोत्सव को सफल बनाने में समिति के समस्त पदाधिकारियों के साथ-साथ श्री श्री कुन्दकुन्द कहान ग्रुप नागपुर, श्री कुन्दकन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल काटोल, श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन नागपुर, श्री अखिल भारतीय जैन महिला फैडरेशन नागपुर, श्री महावीर विद्या निकेतन समिति नागपुर, श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला नागपुर का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

कार्यक्रम के दौरान दिनांक 4 जनवरी को नागपुर-रामटेक-जबलपुर मार्ग पर निर्माणाधीन भव्य 'तीर्थधाम गन्धकुटी जिनालय' संकुल के अन्तर्गत 'श्री गन्धकुटी जिनालय' एवं 'श्री महावीर विद्या निकेतन' के नवीन छात्रावास का शिलान्यास भी अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न किया गया।

महोत्सव के सभी कार्यक्रम पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुये। ●

17 जनवरी 2015, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

श्री त्रिलोकचन्दजी जैन भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री, जयपुर लिखते हैं –

''गुरुदेव श्री कानजीस्वामी एक मेधावी तत्त्वज्ञानी थे। ज्ञानयोग के अनन्य साधक थे। आत्मधर्म के ऊर्जस्वी, तपस्वी एवं प्रखर प्रवक्ता थे। जैनतत्त्वदर्शन के प्रभावी विद्वान एवं व्याख्याता थे। यह उनकी अद्वितीय क्षमता थी कि उन्होंने जैनदर्शन को समझने एवं बोधगम्य शैली में प्रस्तुत करने वाले सैंकड़ों विद्वान तैयार किये। वे तत्त्वदर्शन के प्रचार-प्रसार के आयोजन की अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने आत्मधर्म के प्रचार के लिए वीतराग- विज्ञान विद्यापीठ के रूप में, एक महान ज्ञानयज्ञ प्रारम्भ किया, जो सतत् चलता रहेगा; जिसके माध्यम से जैनतत्त्वदर्शन का केतु लहराता रहेगा।''

ब्र. राजारामजी भोपाल अपने हार्दिक विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

''मैं 1008 श्री बाहुबलीजी की दक्षिण यात्रा को महामस्तकाभिषेक के समय जा रहा था। भोपाल में श्री बाबा छोटेलालजी वर्णी का साथ हो गया। उनके साथ स्वर्णपुरी पहुँचा। वहाँ आध्यात्मिक सन्त श्रद्धेय स्वामीजी के प्रवचन सुनकर मन्त्र-मुग्ध जैसा हो गया, यात्रा का विकल्प टूट गया, करीब 4 माह लगातार वचनामृत का पान किया, जीवन में अनुपम रहस्य समझा।

भले ही लोग कहें कि व्यवहार उड़ा दिया, मुनि निन्दक हैं; परन्तु भाई! पक्षपात छोड़कर निर्णय करो। व्यवहार - कुशलता, सद्प्रवृत्ति जो सोनगढ में है, शायद ही अन्यत्र हो।''

निबन्ध प्रतियोगिता

श्री प्रियंकारिणी महिला मंडल के तत्त्वावधान में **जैनदर्शन में कर्म सिद्धान्त-एक चिन्तन** (चारों अनुयोगों के परिप्रेक्ष्य में) विषय पर अधिकतम 1500 शब्दों में निबंध लिखकर भेजें। निबंध के साथ अपना पूरा पता व फोन नं. अवश्य लिखें। अन्तिम तिथि -11 फरवरी 2015 **निबंध भेजने का पता –** श्रीमती मालती सिंघई, सिघई सॉ मिल, छोटा तालाब के सामने छिन्दवाड़ा (म.प्र.); पायलवाला ज्वेलर्स, गोलगंज, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

हार्दिक धन्यवाद

उदयपुर (राज.) निवासी **चि. गर्वित सिंघवी** पुत्र श्री विनोदजी सिंघवी का विवाह दिनांक 7 दिसम्बर को **सौ. लविका** के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 5100/- रुपये प्राप्त हुये। हार्दिक धन्यवाद।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

20 से 22 जनवरी	हेरले-कोल्हापुर	वेदी शिलान्यास
23 से 25 जनवरी	दीवानगंज,भोपाल	वेदी शिलान्यास
15 फरवरी	हस्तिनापुर	शिलान्यास
20 से 22 फरवरी	जयपुर (राज.)	वार्षिकोत्सव
1 से 6 अप्रैल	विदिशा (म.प्र.)	पंचकल्याणक
17 से 23 मई	पारले (मुम्बई)	पंचकल्याणक
24 मई से 10 जून	मेरठ	प्रशिक्षण-शिविर

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 जनवरी 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए रेनबो ऑफसेट प्रिण्टर्स, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127